दर्शन सिंह बरेटा

ई—मेल-dsbareta@gmail.com

खामोशी का दर्द

सेवक की मौत पर उसकी माता का रोना नहीं थक रहा था। थोड़ी सी बात सुनकर ही वह रोने लगती।

लेकिन उसकी घरवाली की आंखें पता नहीं क्यों नम नहीं हुई। वह टकटकी लगाए आस-पास देख रही थी, जैसे पत्थर की कोई मूरत हो। रोते बच्चों को चुप कराने के लिए ही थोड़ी-बहुत हूं-हां करती। नहीं तो...।

नशेड़ी सेवक सिंह चढ़ती जवानी में ही भगवान को प्यारा हो गया था। भोग की रस्मों पर सब संबंधी इकट्ठे हुए।

सेवक के माता-पिता के बच्चों के भविष्य और बहू की जवानी के साथ- साथ उसके लगातार गुमसुम रहने की हालत भी बड़ी गंभीर लगती थी।

आए रिश्तेदारों के द्वारा भी यह चिंता जाहिर करते हुए हरिंदर चुप बैठी भीतर सुनती रहती। उसने दिल का भेद जरा सा भी न खोला।

हरिंदर के नाना ने दोनों तरफ से निर्णय बताते हुए कहा, देख भाई हरिंदर जो हुआ वो किसी के हाथ बस का तो नहीं, वाहेगुरु की इच्छा है, माननी ही पड़ेगी। सोच-समझ के फैसला किया है कि तू सेवक के नाना के लड़के सरदूल से जुड़कर अपने बच्चों का पालन-पोषण कर ले- तुम्हें भी सहारा होगा। थोड़ा बहुत न .... करते.... वाहेगुरु भली करे अपने आप ही ठीक हो जायेगा.... पंचायत के निर्णय को मान ले।'

'बस बस रहम करो... मेरे और मेरे बच्चों पर... क्यों मुझे गढ़े में से निकली हुई को कुएं में धकेल रहे हो.... जरूरत नहीं मुझे किसी नशेड़ी के सहारे की। ये आठ दस वर्ष में हुआ मेरा बेटा जवान। उतनी देर मैं अपने सास-ससुर के साथ खुद ही समय काट लूंगी। बस... मुझे मेरे रहम पर रहने दो। कहीं किसी को दुख नहीं देती और न किसी की पगड़ी को....।

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

दर्शन सिंह बरेटा : पंजाबी लघुकथा में एक लोकप्रिय नाम है। इनके पंजाबी लघुकथा में दो लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं और इनकी रचनाओं का हिंदी, मराठी, अंग्रेजी और शाहमुखी में अनुवाद भी हुआ है।